अष्टम प्रश्न पत्र :हिन्दी निबन्ध एवं आलोचना साहित्य

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की कुछ विधाएँ इतनी विकसित हो गयी हैं कि उनके स्वतंत्र सघन अध्ययन के लिए पृथक प्रश्नपत्र की आवश्यकता है। हिन्दी निबन्ध और आलोचना ऐसी ही एक विद्या हैं। इनका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आलोचक हो सकता है, जो हिन्दी पठन-पाठन का मूल प्रयोजन है।

पाठ्य विषय

हिन्दी के प्रसिद्ध भारतीय काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना के उदय की परिस्थिति, प्रारंभिक हिन्दी आलोचना का स्वरूप, पाश्चात्य साहित्यलोचन और हिन्दी आलोचना, हिन्दी आलोचना का ऐतिहासिक क्रम-विकासः शुक्लपूर्व हिन्दी आलोचना, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : सैद्धांतिक चिंतन एवं व्यावहारिक पक्ष, शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना, सवातंत्र्योत्तर हिन्दी आलोचना। हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की आलोचनात्मक अवधारणाओं और पद्धतियों-प्रतिमानों का उनकी कृतियाँ के आलोक में गहन अध्ययन।

हिन्दी आलोचना की विविध प्रणालियाँ : काव्यशास्त्री, स्वच्छंदतावादी, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, रूपवादी, समाजशास्त्रीय, संरचनावादी, शैलीवैज्ञानिक, तुलनात्मक आलोचना।

I निबन्ध संग्रह : पाठ्य निबन्ध : बालकृष्ण भट्ट आत्मनिर्भरता, रामचन्द्र शुक्ल- क्रोध, हजारीप्रसाद द्विवेदी-मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है, नंददुलारे वाजपेयी-साहित्य का प्रयोजन, हरिशंकर परसाई-भोलाराम का जीव, विद्यानिवास मिश्र- आँगन का पंछी,

II व्याख्या एवं आलोचना हेतु निर्धारित आलोचक –

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी

डॉ. नगेन्द्र

डॉ. रामविलास शर्मा

डॉ. नामवर सिंह

सम्पादकों द्वारा चुने गये उपर्युक्त लेखकों के तीन-तीन निबन्ध निर्धारित पाठ्यसामग्री होगी।

अद्यतन हिन्दी आलोचना - सम्पा. डॉ. सुधीर रंजनसिंह- पहले पहल प्रकाशन, भोपाल

सहायक पाठ्य पुस्तक :